दृढ़ निश्चययुक्त; **बुद्धिः**=भगवद्भक्ति; **समाधौ**=मन की एकाग्रता में; **न**=नहीं; **विधीयते**=होती।

अनुवाद

जो मनुष्य विषयभोग और लौकिक ऐश्वर्य में प्रगाढ़ आसक्ति के कारण इस प्रकार संमोहित हो रहे हैं, उनके चित्त में भगवद्भक्ति का दृढ़ निश्चय नहीं होता।।४४।।

तात्पर्य

'समाधि' का अर्थ चित्त की एकाग्रता से है। वैदिक शब्दकोष निरुक्ति के अनुसार **सम्यगाधीयतेऽस्मिन्नात्मतत्त्वयाथात्म्यम्** 'आत्मतत्त्व में मनोयोग को समाधि कहा जाता है।' जो इन्द्रियतृप्ति में आसक्त हैं अथवा अनित्य विषयों से विमोहित हो रहे हैं, उनके लिए समाधि कभी सम्भव नहीं हो सकती। उन्हें तो बस माया के चक्र में ही निरन्तर दण्डित किया जाता है।

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।।४५।।

त्रैगुण्यविषयाः=तीनों गुणों को विषय करने वाले हैं; **वेदाः**=वेद; **निस्त्रैगुण्यः**=शुद्धसत्त्व में स्थित; **भव**=हो; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **निर्द्वन्द्वः**=द्वन्द्वों से मुक्त; **नित्यसत्त्वस्थः**=नित्य शुद्ध सत्त्वगुण में स्थित; **निर्योगक्षेम**=प्राप्ति तथा संरक्षण के विचार से मुक्त; **आत्मवान्**=स्वरूप में स्थित।

अनुवाद

वेद मुख्य रूप से प्रकृति के तीनों गुणों का ही विषय करने वाले हैं। हे अर्जुन! तू इन गुणों का उल्लंघन करके उनसे अतीत हो जा। सम्पूर्ण द्वन्द्वों और योगक्षेम की चिन्ता से मुक्त होकर आत्मपरायण (स्वरूपनिष्ठ) बन।।४५।।

तात्पर्य

किसी भी प्राकृत क्रिया को करने से त्रिगुणमय कर्म और कर्मबन्धन बनते हैं। ये सकाम होने के कारण प्राकृत-जगत् में बन्धनकारी हैं। सामान्य जनता को इन्द्रियतृप्ति से क्रमशः शुद्ध सत्त्व के स्तर तक पहुँचाने के उद्देश्य से वेद मुख्य रूप में सकाम कर्मों का ही वर्णन करते हैं। परन्तु अर्जुन की स्थिति तो विलक्षण है—वह साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण का अनन्य शिष्य एवं प्रिय सखा है। अतः उसे सीधे वेदान्तदर्शन के स्तर पर ही आरूढ़ हो जाने की आज्ञा दी गयी है, जिसका प्रारम्भ ब्रह्मजिज्ञासा से होता है। संसार के सब प्राणी जीवन के लिए घोर संघर्ष कर रहे हैं। उनके कल्याण के लिए श्रीभगवान् ने जगत्-सृष्टि कर के उस वैदिक ज्ञान का सदुपदेश किया, जिसमें जीवन-यापन की यथार्थ पद्धति का तथा भवबन्धन से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया है। विषयभोगमय क्रियाओं, अर्थात् कर्मकाण्ड के अन्त में जीव को उपनिषदों के रूप में भगवत्प्राप्ति का अवसर दिया जाता है। ये उपनिषद्